आधा-कल्प है सुख और आधा-कल्प है दुःख
बाप दुःख हरने और देने आया 21 जन्मों का सुख
अभी हम सम्पूर्ण बन गये कम्पलीट बन गए
यह कहकर खुश और अपना मियां मिठ्ठू नही बनना
अभी बहुत पुरुषार्थ करना,दुनिया को बनाना पावन
राजधानी बननी, एक तो जा नही सकता
बापके गुण स्वयं में भरने उसका पुरुषार्थ करना
बुद्धि बेहद में रखनी,हद में नही जाना
स्वदर्शन चक्रधारी बनना और बनाना
संगम पर ही पद्मों की कमाई जमा करने की खान मिलती
एक कदम अर्थात एक सेकंड भी व्यर्थ न जाए
एक में पदम् की कमाई जमा करनी
अप्राप्त न हो कोई भी वस्तु ऐसे संस्कार हो
नॉलेज की सीट पर सेट रहना माना अपसेट नही होना

ॐ शांति
मेरा बाबा